हिमाचल अभी अभी

नई सोच नई खोज

साप्ताहिक

/himachal.abhiabhi @himachal_abhi

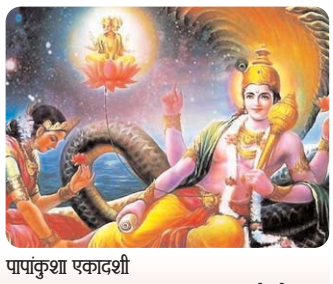

पापांकुशा एकादशी

-पढ़ें पेज 4

RNI No. HPHIN/2015/68432 वर्ष 10 अंक 24 कांगड़ा। शनिवार, 12 अक्तूबर-18 अक्तूबर, 2024 www.himachalabhiabhi.com तदनुसार 27 अश्विन, विक्रमी संवत् 2081 कुल पृष्ठ 4 मूल्य ₹5 | Postal Regn.No. DGPUR/26/24-26

करवा चौथ व्रत

ज्योतिष की मानें तो इस व्रत को करने से दाम्पत्य जीवन भी सुखदायी होता है और आपसी सामंजस्य भी बना रहता है। ये व्रत हर साल कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को रखा जाता है। इस दिन महिलाएं सूर्योदय से लेकर चंद्रोदय तक अन्न और जल कुछ भी ग्रहण नहीं करती हैं...

करवा चौथ का पर्व मुख्य रूप से सुहागिन स्त्रियों का त्योहार है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन सभी शादीशुदा महिलाएं पति की दीर्घायु और सफलता के लिए पूरे दिन निर्जला व्रत करती हैं। ज्योतिष की मानें तो इस व्रत को करने से दाम्पत्य जीवन भी सुखदायी होता है और आपसी सामंजस्य भी बना रहता है। ये व्रत हर साल कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को रखा जाता है। इस दिन महिलाएं सूर्योदय से लेकर चंद्रोदय तक अन्न और जल कुछ भी ग्रहण नहीं करती हैं। व्रत की शुरुआत सुबह सरगी से होती है। शाम में करवा चौथ व्रत की कथा सुनी जाती है और रात में चंद्रमा को अर्घ्य देकर व्रत पूर्ण किया जाता है। मान्यता है इस व्रत को करने से पति को लंबी आयु प्राप्त होती है। जानिए करवा चौथ व्रत कैसे रखा जाता है, इसकी क्या विधि है।

- करवा चौथ व्रत में सुबह सूर्योदय से पहले उठ जाना चाहिए।
- फिर स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए।
- इसके बाद सास द्वारा दिया हुआ भोजन करें।
- करवा चौथ के दिन सुबह जो भोजन ग्रहण किया जाता है उसे सरगी के नाम से जाना जाता है।
- सरगी में सास अपनी बहू को खाने के लिए भोजन और पहनने के लिए नए वस्त्र देती है।
- महिलाएं सरगी में मिला हुआ भोजन खाती हैं और ढेर सारा पानी पीकर निर्जला व्रत करने का संकल्प लेती हैं।
- फिर शाम में चंद्रोदय से 1 घंटा पहले शुभ मुहूर्त में सम्पूर्ण शिव-परिवार की पूजा की जाती है।
- इस दौरान महिलाएं करवा चौथ की व्रत कथा भी सुनती हैं।
- फिर रात में चांद निकलने के बाद चांद की विधि-विधान पूजा की जाती है।
- रात में चंद्रमा को अर्घ्य दिया जाता है और उसके बाद पत्नी पति के हाथ से पानी पीकर अपना व्रत पूरा करती है।

करवा चौथ पर निभाई जाने वाली मुख्य परंपरा

- इस दिन सास अपनी बहुओं को सूर्योदय से पहले सरगी देती हैं। इस सरगी में मिठाई, कपड़े, गहने, मठरी, मेवे, फल, पूरी व सेवई होती है। वहीं शाम में पूजा के बाद बहू अपनी सास को कपड़े, ड्राई फ्रूट्स, मिठाई इत्यादि चीजें देती है और उनका आशीर्वाद प्राप्त करती है।

■ पं. कुलदीप शास्त्री